CLASS-XII
हिन्दी (आधार) पेपर हल सहित
SESSION 2021 – 22

खंड – क
(कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन) **(20)**

प्र.1 निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक का चयन कर लगभग 200 शब्दों का एक रचनात्मक लेख लिखिए - [1 × 5 = 5]

- **कितना कुछ देती है प्रकृति**
- **जब अचानक भू स्खलन हुआ**
- **मोबाइल खेल की बढ़ती लत**

उत्तर • कितना कुछ देती है प्रकृति

संकेत - प्रकृति प्रदत्त उन सभी साधनों का वर्णन करना है जिससे मानव जीवन यापन कर रहा है .विशेष रूप से उन पदार्थों का जिनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती

• जब अचानक भू स्खलन हुआ

संकेत – भूकंप से कुछ देर पहले की स्थिति का संक्षेप में वर्णन कर भूकंप के बाद हुई त्रासदी का वर्णन करना है

• मोबाइल खेल की बढ़ती लत

संकेत – विडियो गेम के बढ़ते प्रभाव के कारण बच्चों की कोमल मानसिकता ,व्यवहार परिवर्तन और अध्ययन पर पड़ते प्रभाव का वर्णन करना है

प्र.2(a) आपके पैतृक गाँव में उच्च शिक्षण संस्थानों की कमी है .किसी प्रमुख हिंदी समाचार–पत्र के संपादक को पत्र लिखकर ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थानों के अभाव का उल्लेख कीजिये और उन क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संसथान खोलने का सुझाव दीजिये - [5]

उत्तर

सेवा में ,
श्री मान संपादक महोदय,
समाचार पत्र का नाम,
नगर का नाम (जहाँ से समाचार पत्र प्रकाशित होता है)
दिनांक –
मान्यवर ,
विषय-
विषय वस्तु का विस्तार .....
.....
.....

भवदीय ,
क ख ग

अथवा

(b) आप अपने घर के पास स्थित माँल में खरीददारी करने गए खरीददारी करने के उपरांत आपने पाया कि आपकी स्कूटी निर्धारित स्थान पर नहीं है .थाना जाने पर आपकी शिकायत भी नहीं लिखी गई.पूरी जानकारी देते हुए क्षेत्र के पुलिस उपायुक्त/अधीक्षक को पत्र लिखिए। [5]

सेवा में ,
श्री मान पुलिस अधीक्षक महोदय,
कार्यालय का नाम,
नगर का नाम (जहाँ कार्यालय स्थित है)
दिनांक –
मान्यवर,
विषयः
विषय वस्तु का विस्तार .....
.....
.....
भवदीय ,
क ख ग

प्र.3(i) (a) कहानी और नाटक में क्या अंतर है? दोनों की समानता बतलाते हुए अंतर स्पष्ट कीजिये [3]

उत्तर नाटक और कहानी में अन्तर

कहानी की संरचना छोटी होती है जबकि नाटक की संरचना बड़ी होती है।
कहानी श्रव्य साहित्य होता है जबकि नाटक दृश्य साहित्य होता है।
कहानी सुनी जाती है जबकि नाटक देखा जाता है
कहानी को पढ़कर प्रस्तुत किया जाता है जबकि नाटक को अभिनय करके प्रस्तुत किया जाता है।
कहानी को किसी भी शैली मे प्रस्तुत कर सकते हैं जबकि नाटक को केवल संवाद की शैली में प्रस्तुत किया जाता है।

नाटक और कहानी में समानता

नाटक और कहानी दोनों में कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है।. दोनों में एक कहानी होती है। दोनों में में पात्र होते हैं। दोनों में परिवेश होते हैं। दोनों में क्रमिक विकास होता है। दोनों में संवाद होते हैं। दोनों में पात्रों के मध्यम द्वंद्व होता है। दोनों में एक उद्देश्य निहित होता है। दोनों में चरमोत्कर्ष होता है।

अथवा

(b) कहानी के पात्रों को नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार प्रभावशाली बनाया जा सकता है?उदहारण सहित समझाइए। [3]

उत्तर कहानी के पात्रों को नाट्य रूपांतरण करते समय पात्रों की दृश्यात्मकता का पात्रों के साथ मेल होना चाहिए।

घटनाओं के अनुरूप पात्रों का मनोभाव होना चाहिए

पात्रों की भाव भंगिमाओं का ध्यान रखा चाहिए .

पात्र अभिनय के अनुरूप हो

पात्र जैसा चरित्र प्रस्तुत कर रहा है उसी के अनुरूप संवाद शैली और भाषा होनी चाहिए

पात्र के चरित्र के अनुरूप वेश भूषा का ध्यान रखा जाना चाहिए

(ii)(a) रेडियो नाटक के लिए किन तीन मुख्य बातों का विचार करना चाहिए और क्यों? [2]

उत्तर रेडियो नाटक को अंधेरे का नाटक भी कहा जाता है। क्योंकि इसका मंचन अदृश्य होता है या यह भी कहा जा सकता है कि इसे देखा नहीं जा सकता सिर्फ सुना ही जा सकता है। भाषा, संवाद, ध्वनि एवं संगीत का रेडियो नाटक में विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए ।

पात्रों की सीमित संख्या–रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए। इसमें पात्रों की संख्या 5–6 से अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि इसमें श्रोता केवल ध्वनि के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है। यदि रेडियो नाटक में अधिक पात्र होंगे तो श्रोता उन्हें याद नहीं रख सकेंगे।

भावभंगिमाओं के स्थान पर ध्वनि प्रभावों और संवादों को प्रभावी बनाया जाना चाहिए

(b) रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा और रंग मंच के लेखन से भिन्न कैसे है? [2]

उत्तर रेडियो नाटक सुनने को ध्यान में रख कर लिखा जाता है जबकि सिनेमा और रंग मंच के लेखन को दृश्य के आधार पर लिखा जाता है .रेडियो नाटक में भाव भंगिमा का ध्यान रखने की आवश्यकता नहीं होती किन्तु है सिनेमा और रंग मंच के लेखन में भाव भंगिमा का विशेष ध्यान रखा जाता है .रेडियो नाटक में मंच सज्जा पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती है किन्तु सिनेमा और रंग मंच के लेखन में मंच सज्जा पर बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है दृ

प्र.4(i) (a) समाचार लेखन की सबसे लोक प्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली कौनसी है? उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिये। [3]

उत्तर समाचार लेखन की की सबसे लोक प्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली उलटा पिरामिड–शैली (इंवर्टेड पिरामिड स्टाइल) है। यह शैली कहानी या कथा लेखन की शैली के ठीक उलटी है जिसमें क्लाइमेक्स उलटा पिरामिड में समाचार का ढाँचा बिलकुल आखिर में आता है।समाचार को पढ़ते समय समाचार के आरंभ में ही उस विषय की पूरी जानकारी दे दी जाती है। फिर घटते क्रम में धीरे–धीरे उन खबरों को आगे बढ़ाते हुए अंत किया जाता है।

(b) विशेष लेखन से क्या अभिप्राय है? इसकी भाषा शैली सम्बन्धी विशेषताओं का आधार क्या होता है और क्यों? [3]

उत्तर विशेष लेखन क्या है? अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल, अर्थ–व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों संबंधित घटनाएँ, समस्याएँ आदि से संबंधित लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इस प्रकार के लेखन की भाषा और शैली समाचारों की भाषा–शैली से अलग होती है। खेल, अर्थ–व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग तकनीक शब्द का प्रयोग होता है। अतः उस क्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाली भाषा का प्रयोग किया जाता है .

(ii) (a) बीट रिपोर्टर बनने के लिए क्या–क्या तैयारी करनी पड़ती है ?उदहारण सहित समझाइए [2]

उत्तर बीट रिपोर्टिंग का अर्थ होता है कि रिपोर्टर जिसकी रुचि किसी विशेष मुद्दे में होती है। इनको काम इनके दिलचस्पी के अनुसार मिलता है। इनका विशेष डेस्क होता है। विशेष ख़बरे बीट रिपोर्टर ही देते हैं।

बीट रिपोर्टर को अपने क्षेत्र का गहन अध्ययन करना पड़ता है।

बीट रिपोर्टर को अपने स्रोतों से शीघ्रता से संपर्क करना पड़ता है और सभी आवश्यक जानकारी प्राप्त कर समय सीमा में लिखना होता है।

सीमित समय के लिए कवर स्टोरी तैयार करने की योग्यता अर्जित करनी होती है।

कहानी तक पहुँचाने के लिए ज्ञान और स्रोत दोनों हासिल करने में सक्षम होना चाहिए।

अथवा

(ii) (b) नए एवं अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से आप क्या समझते है? यह एक चुनौती कैसे है? [2]

उत्तर किसी नए अथवा अप्रत्याशित विषय पर कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर ढंग से अभिव्यक्त करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है।

सामान्यतया लेखक को आत्मनिर्भर होकर विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का अभ्यास नहीं होता

मौलिक प्रयास करना पड़ता है

तथ्यों के अभाव और सम्बंधित जानकारी न होने पर अतिरिक्त प्रयास करना पड़ता है

बौद्धिक और चिंतन शक्ति में वृद्धि के प्रयास करने पड़ते है .

खंड – ख

(पाठ्यपुस्तक और अनुपूरक पाठ्यपुस्तक) (20)

प्र.5 निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50–60 शब्दों में लिखिऐ।

[2 × 3 = 6]

(i) उषा कविता के आधार पर बतलाइए कि कविता में भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका क्यों कहा है? [3]

उत्तर कविवर शमशेर बहादुर सिंह ने भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका इसलिए कहा गया है क्योंकि सुबह का आकाश कुछ–कुछ धुंध के कारण मटमैला व नमी– भरा होता है। राख से लीपा हुआ चौका भी सुबह के इस कुदरती रंग से अच्छा मेल खाता है। अतः उन्होंने भोर के नभ की उपमा राख से लीपे गीले चौके से की है।

(ii) लक्ष्मण मूर्छा और राम विलाप प्रसंग के आधार पर बतलाइए कि पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी की क्या दशा होती है ?कविता में इसका उल्लेख क्यों किया है? [3]

उत्तर पंख के बिना पक्षी का जीवन असहाय हो जाता है उसी प्रकार सूंड के बिना हाथी की दशा दयनीय हो जाती है। राम को भी लक्ष्मण के बिना अपना जीवन उतना ही हीन लगता है जितना पंख के बिना पक्षी, मणि के बिना साँप तथा सँड़ के बिना हाथी का जीवन हीन होता है।

(iii) आँगन में ठुनक रहा हैं जिदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है
रुबाइयाँ की उपर्युक्त पंक्तियों में कौनसी विशेषता अभिव्यक्त हुई है? [3]

उत्तर रुबाइयाँ की उपर्युक्त पंक्तियों में बाल–मनोविज्ञान अभिव्यक्त हुआ है। बच्चों का स्वभाव होता है कि बच्चे किसी भी बात या वस्तु पर जिद कर बैठते हैं और जब तक उनकी जिद पूरी नहीं हो जाती तब तक वें मचलने रहते हैं।माता– पिता बच्चे को किसी बहाने से उसे बहलाने की कोशिश करते है .कविता में भी माँ बच्चे को दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर उसे बहलाती है।

प्र.6 निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 50–60 शब्दों में लिखिए।

[3 × 3 = 9]

(i) 'पहलवान की ढ़ोलक' कहानी से क्या संदेश मिलता है? अपने शब्दों में लिखिए। [3]

उत्तर पहलवान की ढोलक' पाठ में जहाँ यह संदेश है कि व्यवस्था बदलने के साथ–साथ लोक कलाओं और इसस संबंधित कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने से उनकी दुगर्ति हो जाती है, वहीं इस कथा के माध्यम से यह संदेश देने का भी प्रयास किया गया है कि लोक कलाओं को संरक्षण दिया जाना चाहिए ताकि लुट्टन पहलवान जैसे किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन में इतनी तकलीफों का सामना ना करना पड़े।

दूसरा सन्देश यह है कि मनुष्य को कथा नायक लुट्टनकी तरह विषम स्थितियों में भी सकारात्मक रहना चाहिए और स्थिति का मुकाबला करते रहना चाहिए

(ii) सीमा के आधार पर बंटे होने पर भी भारत और पाकिस्तान की जनता के दिलों में एक ही धड़कन है, जो एक दूसरे से मिलने के लिए आतुर है ,नमक कहानी के आधार पर इस कथन को सिद्ध कीजिये। [3]

उत्तर मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से जमीन और जनता बँट नहीं जाती है। राजनीतिक कारणों से मानचित्र पर लकीर खींचकर देश को दो भागों में बँट दिया जाता है। परंतु यह कार्य जनता की भावनाओं को नहीं बाँट पाता। उनका मन अंत तक अपनी जन्मभूमि से जुड़ा रहता है। पुरानी यादें उन्हें हर समय घेरे रहती हैं। जैसे ही उन्हें मौका मिलता है, वे प्रत्यक्ष तौर पर उभरकर सामने आ जाती हैं।

दोनों देशों को यद्यपि भूगोल ने विभाजित कर दिया है लेकिन लोगों में वही मुहब्बत अब भी समाई हुई है। इन दोनों के बीच रिश्ते मधुर और पवित्र हैं। इनमें मुहब्बत ही वह डोर है जो एक–दूसरे को बाँधे हुए है। मुहब्बत का नमकीन स्वाद इनके रिश्तों में घुला हुआ है। सिख बीबी, पाकिस्तानी अधिकारी और भारतीय कस्टम के उद्‌गार के माध्यम से लेखिका ने इसी बात को सिद्ध किया है।

(iii) डा.आम्बेडकर की कल्पना के आदर्श समाज की आधारभूत बातें संक्षेप में लिखिए। [3]

उत्तर इस पाठ में लेखक ने जाति–प्रथा को श्रम विभाजन का एक तरीका मानने की अवधारणा को निरस्त करते हुए केवल भावात्मक नहीं, बल्कि आर्थिक उत्थान, सामाजिक व राजनैतिक संघटन और जीवनयापन के समस्त भौतिक पहलओं के ठोस परिप्रेक्ष्य में जातिवाद के समूल उच्छेदन की अनिवार्यता ठहराई है। साथ ही लेखक ने एक आदर्श समाज की कल्पना भी की है।

हमें चाहिए कि सबके साथ इस आधार पर समानता का व्यवहार किया जाए। यह समाज में रहने वाले हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। इस तरह हम समाज का उचित निर्माण ही नहीं करते बल्कि समाज का विकास भी करते हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति के साथ समाज में समानता का व्यवहार नहीं किया जाता है, इससे सामाजिक व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो सकती है।

(iv) श्रम विभाजन और जाति प्रथा पाठ के आधार पर बतलाइए कि मनुष्य को पेशा बदलने की आवश्यकता क्यों पड़ती है? [3]

उत्तर भारतीय समाज में जातिवाद के आधार पर श्रम विभाजन और अस्वाभाविक है क्योंकि जातिगत श्रम विभाजन श्रमिकों की रुचि अथवा कार्यकुशलता के आधार पर नहीं होता, बल्कि माता के गर्भ में ही श्रम विभाजन कर दिया जाता है जो विवशता ,अरुचिपूर्ण होने के कारण गरीबी और अकर्मव्यता को बढ़ाने वाला है .भारतीय समाज में जाति प्रथा, श्रम–विभाजन का स्वाभाविक रूप नहीं कही जा सकती, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है । समय दृसमय पर व्यवसाय की प्रवृति में परिवर्तन होता रहता है ,पैतृक व्यवसाय से गुजर–बसर करना मुश्किल हो जाता है ,ऐसी स्थिति में मनुष्य को पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ती .ऐसा न होने पर भुखमरी और बेरोज़गारी की समस्या उत्पन्न हो जाती है

प्र.7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये – [3 + 2 = 5]

(i) (a)उन तथ्यों का उल्लेख कीजिये जो लेखक की इस मान्यता की पुष्टि करते है कि सिन्धु सभ्यता समृद्ध थी परंतु उसमे भव्यता का आडम्बर नहीं था। [3]

उत्तर सिन्धु सभ्यता, एक साधन–सम्पन्न सभ्यता थी परन्तु उसमें राजसत्ता या धर्मसत्ता के चिह्न नहीं मिलते। वहाँ की नगर योजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल–व्यवस्था, साफ–सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता द्वारा उनमें अनुशासन देखा जा सकता स्नान घर, पूजा स्थल, सामुदायिक भवन मुअन–जो–दड़ो नगर की सभ्यता को साधन सम्पन्न बनाते थे। यहाँ खेती, पशुपालन, व्यापार, उद्योग–धंधे सब कुछ होता था किन्तु यहाँ न तो भव्य राजप्रासाद थे, न संत महात्माओं की समाधियाँ और न भव्य राजमुकुट या हथियार। यह तथ्य प्रमाणित करते है कि सिन्धु सभ्यता समृद्ध थी परंतु उसमे भव्यता का आडम्बर नहीं था

अथवा

(i) (b)ऐन फ्रैंक की डायरी पिछले पचास वर्षों में विश्व में सबसे अधिक पढ़ी गई पुस्तकों में से एक है. इस डायरी में ऐसी क्या विशेषता है? समझाइए। [3]

उत्तर ऐन की डायरी की किसी लेखक की काल्पनिक परिकल्पना नहीं बल्कि भोगे हुए यथार्थ की वास्तविक अभिव्यक्ति है .ऐन की डायरी एक भोगे हुए यथार्थ की उपज है। इस तरह साधारण लड़की द्वारा रचित होने के बाद भी यह साठ लाख यहूदी लोगों की आवाज बन जाती है। इल्या इहरनबुर्ग ने इस डायरी के सम्बन्ध में कहा है कि "ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है, तो साथ ही उसके निजी सुख–दुःख और भावनात्मक उथल–पुथल का भी।

इसके अतिरिक्त ऐन फ्रैंक की डायरी, एक ऐतिहासिक दस्तावेज भी है जिसमें यहूदियों पर नाजी अत्याचारों को जीवंत वर्णन है। यह डायरी व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों का भी बयान करती है। ऐन व उसके परिवार को दो वर्ष से अधिक समय तक अज्ञातवास बिताना पड़ा। अज्ञात वास से लेकर गिरफ्तार होने तक का वर्णन बिना मिलावट बनावट के उसी रूप में वर्णित है जिस रूप में देखा और भोगा इसी विशेषता ने ऐन फ्रैंक की डायरी को पिछले पचास वर्षों में विश्व में सबसे अधिक पढ़ी गइ ंपुस्तकों में से एक बनाया है.

(ii)(a) मुअन जो दड़ो के बड़े घरों में छोटे कमरें होने का क्या कारण था? [2]

उत्तर मुअन जो दड़ो के बड़े घरों में छोटे कमरें होने का कारण यह रहा होगा कि मुअन जो दड़ो मानव निर्मित टिलों पर बसाया गया था .समय के साथ साथ आबादी बढ़ने लगी होंगी . रहने योग्य स्थान की कमी पड़ने लगी होगी .इस कारण बड़े कमरों को छोटे–छोटे कमरों में बादल दिया गया होगा

(b) ऐन की डायरी उसकी निजी भावनात्मक उथल–पुथल का दस्तावेज भी है, इस कथन की विवेचना कीजिये। [2]

उत्तर ऐन को अज्ञातवास के दो वर्ष डर व भय में गुजारने पड़े। यहाँ उसे समझने व सुनने वाला कोई नहीं था। यहाँ रहने वाले लोगों में वह सबसे छोटी थी। इस कारण उसे सदैव डाँट–फ़टकार मिलती थी। यहाँ उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई नहीं मिलता। वह अपने सारे व्यक्तिगत अनुभव व मानसिक उथलपुथल को डायरी के पन्ने पर लिखती है। इस तरह यह डायरी उसकी निजी भावनात्मक उथल–पुथल का दस्तावेज भी हैं।